

॥ आना २७ ॥

॥ श्रीरामविजययथ ॥ सप्तविंशतिश्चायप्रसंगः ॥



Joint project of the
Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(2)

॥राम॥१॥

॥ श्रीमहागणाधिपतये नमः ॥ आळशिक्कदा उदिमन करि ॥ नवजा
यमंदिरा बाहेरि ॥ तो जगन्निवास साहाकारि ॥ घरि वनी धारि ॥
ग्य आले ॥ १ ॥ मृती काख णा वया जात ॥ तो मादुससा पडे अकरम ॥
त ॥ तैसे आम्हा शि आले यथाथ ॥ सहस्रनाथ प्रसासे दं ॥ २ ॥ अथा
सन करिता बहे वस ॥ सामंडुल सर मवी जय मांदुस ॥ मग गगनी
ह माये हर्ष ॥ उपर मती से जा हाता ॥ ३ ॥ मांदुसे उघडुनी न्या हाकि ॥
तो आत आहोती सात कोह वि ॥ तें दुसत कांडर साग किं ॥ येकाहुनी
येकनी शेष ॥ ४ ॥ कोह वि उघडुनी पाहत ॥ तो आत दिव्य नाणे दिपव
तं ॥ १ ॥ अती झान वैराग्य युक्त ॥ धव धवीत वीरा जती ॥ ५ ॥ तो चतुर श्रोत
झान संपन्न ॥ ते बंधु जवळि आले घावोनी ॥ लणती आला सवादा दे

॥ वीजय ॥ १ ॥

इसमान ॥ मा डले भाडण परस्परे ॥ ६॥ अण ती हे वा लिभिकाचि कोह कि ॥
 तुज पुर्व भाग्ये लाघलि ॥ तरि आसारी वाटा येवे की ॥ देई सवारी सारिखा ॥ ७॥
 चतुर पंडित संत जन ॥ श्रवण पती सबै सले समान ॥ कोह कियं पुढे ने गुन ॥
 येक सरेर चवी लि ॥ ८॥ मग ती हि कर्ण दार उचडुन ॥ हृदये भांडारि सांडवी
 लि पुर्ण ॥ श्रोत वक्त सम समान ॥ नीज सुख पुर्ण पावले ॥ ९॥ पांच कोह कि
 दावी लि फोडुन ॥ साहाये यव्य कोड मी शोक गहन ॥ असो गत कथा ध्याई
 नीरोपण ॥ राघवें रावण नी मिठिला ॥ १०॥ छत्र मुगुट टाकी ले छेडुन ॥ प
 रम अपमान पावला रावण ॥ मग लंके गि गेला परतोन ॥ सीतार्णवो बुडा
 ला ॥ ११॥ जैसा राहु ग्रस्ति नी शाकर ॥ कीकाक बंडे दग्ध कातार ॥ कपाळ
 शुके पीडे महा व्याघ्र ॥ तैसा दशकंदर उतरला ॥ १२॥ नावडे छत्र सीको

(3)

॥ राम ॥
॥ १५ ॥

सन ॥ जे जे पा हो जाये रावण ॥ राम रूप दिसे पुर्ण ॥ नाउ वे आन पदार्थ ॥ १३ ॥
संभामंडु पि बैस लारावण ॥ अयंत दिसे कच्छा हिन ॥ ॥ मंडौ दरिपती च
चन ॥ बोलता जाता ते वेळा ॥ १४ ॥ अण के सावो परित काळ ॥ मक्षी
के ने हालवी ला ॥ १५ ॥ गोक ॥ चित्रीया से पुरे गपाळ ॥ गी किलान वलवा
टते ॥ १६ ॥ खद्या ते ते जे करान ॥ आहा कोन गेला चंडकीर्ण ॥ ते सामी
आजी क्षरावण ॥ युधिष पाचले पस जया ॥ १७ ॥ मग कोलती प्रधा ना ॥
आता उटवा वाकुं न कर्ण ॥ तो राम सो मी मा सहित सैन्य ॥ गी किलक्ष
ण नलगता ॥ १८ ॥ तो रावण समान लिमात ॥ अण घड श्रोत्र उटवा वा
वरित ॥ मग वीर पाक्ष मो हो द्वार नीचता ॥ दश सहस्र राक्षस घेउनी १९ ॥
मघ परवा लाचारि सहस्र ॥ कुजरा वरिघात लया सहस्र ॥ देखोनी भया

॥ वीजय ॥
॥ २ ॥

न कशरिर ॥ कं पसु टा राक्षसा ॥ १९ ॥ वनगज महे से तरस ॥ नों कां
 त गुंत ले बहु वस ॥ दो की ता श्वास उच्छ्वास ॥ नीर्गमने के तया सि ॥ २० ॥
 सवाल क्ष गा वरवाल ॥ सरिता पती चेतुं बळ जळ ॥ तेना भी प्रमाण
 के वळ ॥ कुभकण सहोय पे ॥ २१ ॥ असो राक्षस सर्व मीळती ॥ द्वा
 रिये कदाचि हा काफोडिती ॥ स कळवां पी कुपे जाटती ॥ २२ ॥ महागज
 रेकरो नीया २२ ॥ स्वर्ग पर्यंत न जाती ॥ ये शाकणी गैरिना हा
 टिती ॥ २३ ॥ उरावरि महागज चालूवीती ॥ परिजागन वेसवथा ॥ २४ ॥
 येक गगन चुबीत वोरा घेउनी ॥ कर्णिना शिकी बटवीती पुण ॥ येकना
 कपुज्या अवरा घुन ॥ श्वासो श्वास कोडिती ॥ २५ ॥ येकर क्षपाया
 णघेती ॥ वर्म स्थले बळताडिती ॥ कुडुती क्षण ओशधवोतीती ॥ ना

॥राम॥
॥३॥

५

सापुटेघेउनीया॥२५॥उपायकेलेबहुतपुर्ण॥परिजागानकेकुं॥
कर्ण॥मगधीरुपाक्षेकीनरिआणुने॥कर्णमाजीवैसवीलुयी॥२६॥
ल्यावेपरमसुश्वरगायन॥अकनाडोषयेधावोन॥तेकोकुं॥कर्ण
लागाहोउने॥सावधानबैसला॥२७॥जाभरदिधलिभयानक॥
जगप्रोसीलेसकळिक॥दाटसलेपडोदेख॥अपारद्यालुनीर
गडिल॥२८॥उन्नआणीभासायेपवत॥गिकिकेराक्षसेबह
त॥मगनेत्रपुसोनपाहात॥प्रधानाकडुतेवकि॥२९॥मगती
हिप्रणीपातकरनी॥सागीतलेसर्ववर्तमान॥शीताआणी
लिहारुनतेशुनसर्वकथियेले॥३०॥हनुमंतेलेकाजाकुना॥आ
लारामलक्षुमणघेउन॥कालयेयुधिरावण॥पराजयपावला॥३१॥

॥वीजय॥
॥३॥

॥ आ॥ ॥

(4A)

रावणपरमचिताक्रांत॥यालागीवीनवीले वृत्ति॥मांडलाअ
द्रुतकल्पात॥आटलेसमस्तनीशाखर॥३२॥उभाटाकलाकुं
भकंर्ण॥शृणुअसावरणभुमीसजार्न॥गैमवीनवीतीमध
न॥राजदर्शनघेईजे॥३३॥संभामंडपीयाचाहिला॥कुं११
कंर्ण॥लंकादुर्गतयागुन्मयमग॥वाटआकाशावालीहटक
ण॥वीमानेसुरगणपळवीत॥३४॥लंकावेषितलेवाग्र॥ते
तेशूनपळालेसमग्र॥देखाजीकुंभकंर्णचेशरिर॥कपिमुखि
तपडियेले॥३५॥रघुपतीसहवीभीषण॥स्वामीहोरुठवी
लाकुंभकंर्ण॥आश्वीयकेरिरघुनरन॥शरीरदरवानीवयाचे॥३६॥
वीभीषणहणयाचेजन्मकाळि॥राघवायेकचिहाकडालि

णे

॥ राम ॥

॥ ४ ॥

(5)

प्रलयवर्तलाभुमंडकि ॥ तोवर्णितानवजाये ॥ ३७ ॥ मातेची
यागुदरातुन ॥ भुमीवरिपडिलाकुभकर्ण ॥ तीससहस्रस्त्री
याजाण ॥ वदनपसरनगीकियेला ॥ ३८ ॥ ईद्राचाअैरावत
घरुनीचरणी ॥ येणेसमरिआपटिलाधरणि ॥ अैरावतीचेदे
तमोडुनी ॥ ईद्रासयेणताडिले ॥ ३९ ॥ शक्रेवज्रउमडुनीघा
तले ॥ याचैरोमहिनाहिहारिले ॥ द्यासनीद्राआवरणपडि
ले ॥ अणानीलोकवाचले ॥ ४० ॥ असोकुभकर्णद्विदोरखान ॥
हिवज्वरचापीलवानरगण ॥ येकाच्यामुरकुज्यावळोन ॥
दातरकीकिबैसलया ॥ ४१ ॥ कोवतेपाहेचीपपाणी ॥ तोभया
भित्तभवयेवाअैरसर्वहि ॥ सर्वावेअतरजाणोनी ॥ मासुतीक

॥ जेवीय ॥
॥ ४ ॥

॥ आ २ ॥

डेपाहिले ॥ ४२ ॥ तोनी मीस्र नलगताहनुमंत ॥ अकस्मा
त गेला लंके आत ॥ कुभकर्ण सभेसी खात ॥ तो केले अद्भुत
वायु नंदन ॥ ४३ ॥ कटि प्रदेशी कुभकर्ण धरिला ॥ तीन वेला उच
लनी टेवीला ॥ रघुवीर आपी समस्त डोळा ॥ तरस्त उहोनी पा
हती ॥ ४४ ॥ मद्यपणी कुभकर्ण ॥ तला असे भुजोन ॥ आ
पण स उचलितो वायु नंदन ॥ ह हिंसा शिनेणवे ॥ ४५ ॥ मगतो शी
ता शोक हरण ॥ पुठती उचलुनी कुभकर्ण ॥ ११० ॥ जावळे आपोनी ॥
या कीत होता युवल वरि ॥ ४६ ॥ मागुती केला अनुमान ॥ ह्येण
गनी देउभीर कारुन ॥ कीलंके वरि आफकुन ॥ चूर्ण करु सर्व हि ॥ ४७ ॥
मग ह्येण नव्हे हावी चार ॥ तंका चूर्ण होईल समग्र ॥ मग वीभी

॥ श्रीराम ॥

॥ ८ ॥

⑥

षण्णपवर ॥ नादे लुके साये स्थिति ॥ ४८ ॥ सुवे के वरि घा वा रा ॥ ॥ वीजय ॥
कुन ॥ तिरि वानर सेना हो र ल युर्ण ॥ १३ ॥ मुड कि द्या वा आ प टो न ॥ ॥ ॥ ॥
तरि घरि श्री जारि लर स ते क ॥ ॥ ४९ ॥ उर्ध्व पथ चेटु न ॥ ॥ दुर दि
धल ॥ भौर का रु न ॥ ॥ इतु के कर नी कं दे न ॥ ॥ राघवा पा शि पर त ला ॥ ॥ ५० ॥
भय भाणी वार पुर्ण गे ले क पि श्वा नी चे नी यो न ॥ ॥ जै सा गु ग व तो
रु ह कि र्ण ॥ ॥ व न जा य मु कि रु न ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ कि ह नु म ते नौ ज व ल
द उ न ॥ ॥ वान रा स दि ध ल र स य ण ॥ ॥ हि व उ व र भ ये दी र ण ॥ ॥ नी धो
न गे ले सर्व हि ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ गु जा व ल भ व डु नो र क्षा व रि घा त ल न ॥ ॥
न ॥ ॥ र क्षे जाले श त यु र्ण ॥ ॥ रा क्षि स व रि प डे ता नि ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ अ सो रा
ध व न्य र णी भा क ॥ ॥ टे वी अं ज नी चा बा ल ॥ ॥ म ग सु ग्री वा दि क पी

॥ अ॥ ॥

सकळ ॥ घावोनी मेटती हनुमंता ॥ ७४ ॥ शब्द सुमन दिव्य माला ॥ कपिचा सुती
कपिचा गळा ॥ हणें कुंभकर्ण कावे तसा पडले ॥ परिका सोडि लाने कळतो ॥ ७५ ॥
मारुतीचा अंतराध ॥ कपिप्रती सांगे रघुनाथ ॥ कुंभकर्ण सम मह से मृत्यु ॥ हे हनु
मंत ज्ञान तसे ॥ ७६ ॥ सीका वलोकने नीभीती ॥ मागील कथा वीलोकी जेश्रौति ॥
कुंभकर्ण जातसे सभे प्रती ॥ गोवर्ण सीमर वया ॥ ७७ ॥ बघुसमोर देखोन ॥ हर्ष
को दला दशवदन ॥ तो कुंभकर्ण पाणि पात करून ॥ नीजस्थानी विसला ॥ ७८ ॥
जेवी प्रलय मेघ करि गर्जना ॥ ते सावा ताजाला कुंभकर्णा ॥ काय संकट पडले
हणोन ॥ जागे केल मज लागी ॥ ७९ ॥ महा प्रलय मांडला ॥ कीडवी जात होती
सुसातला ॥ किं कर्ता तनु जरि चाळोन आला ॥ हणोनी मज जागे केले ॥ ८० ॥
सांगे रावण पुर्ववर्तमान ॥ जनकजा आणि लिहेरुन ॥ यालागी वानर देखेसी

(२)

॥ राम ॥
॥ ६ ॥

रघुनन्दन ॥ स्ववेकाय किराहिला ६१ ॥ धुम्राक्ष आणिवज्रदिष्टिरि ॥ प्रधानपड
लाप्रहस्तसुमरि ॥ मगमीयुधोसगतेसडकरि ॥ युधिपावलोपराजय ॥ ६२ ॥ ॥ वीजय ॥
परममजसकरपडले ॥ म्हणोनबंद्युतसुगवीले ॥ मजयितेव्याथिनेव्यापीले ॥ ॥ ६३ ॥
यासओषधतुदेर ॥ ६३ ॥ संकटिबधुपावेसाचार ॥ दरिद्रकाळिजाणीजमीत्र
संशयनीरसावयासमग्र ॥ सदुरचरणधरावे ॥ ६४ ॥ तमदाटलाजरिघोर ॥ तरि
दिपीकापाजळवीसहर ॥ येतावेरीयाचमारकडारत्र ॥ तरिवाटणपुढेकरावे ॥ ६५ ॥
दुष्काळपडताअयंत ॥ तरिदातयापासिजावेसवरीत ॥ सकटआह्वासीपडले
बहुत ॥ ह्मणोनीतुहासजागविले ॥ बावरिकुंभकर्णबोलवयन ॥ बुद्धिः कर्म
नुसारपूर्ण ॥ जानकिव्यर्थआणुन ॥ कुळक्षयआरंभीले ॥ ६७ ॥ रामहोवैकट
नारायण ॥ सुराचोअवतारवानरगण ॥ हेनारदेवर्तमान ॥ पुर्वीचमजेसोगीतले ॥ ६८ ॥

असे। जे शुभाशुभकर्म होत ॥ ते भोगीलया वीण न चुके यथार्थ ॥ फुटिल होणार भव वीर्यार्थ ॥
 ते चुके ना कदा हि ६९ ॥ परिकरून येते राया केले ॥ शेवटि शिते शित रि भोगीले ॥ ये रस हें
 बहूत प्रयत्न केले ॥ परिते वस्य न केले ॥ ७० ॥ ते रा मा वेग कि त घुता ॥ आणी का वस्य
 न के सर्वथा ॥ कुंभ कर्ण लुण ले क न था ॥ तरि राघव रूप धरितु ॥ ७१ ॥ जपो न या का
 पर्य मंत्र ॥ होरत माळ नीळ रघुवीर ॥ शित वस्य होर ल साधार ॥ क्षण मात्र न लगता ॥ ७२ ॥
 मग बोले लंके श्वर ॥ मी नी आंग हो तां रघुवीर ॥ ते को दुर्वास न समग्र ॥ मा वळ ल मा
 सी समुक्ति ॥ ७३ ॥ घरास येता वासर न पा ॥ मगत म नूर थिते क्षणि ॥ की गरुड ये
 ता स पंथी ॥ पळती उदानी जीव भय ॥ ७४ ॥ ते सा श्री राम होता जान ॥ वाटे पर
 नारि माते समान ॥ येक वचन येक बाण ॥ येक प नीर ती तो ७५ ॥ याला गी वधु जाण
 राम सौ मी नवानर गण ॥ त्या सी संव्हारी लया वीण ॥ वस्य न के जान की ॥ ७६ ॥

॥ श्रीराम ॥

॥ ७ ॥

(४)

यावरि बोले कुंभकर्ण ॥ आतागी कि न कपि सैन्य ॥ क्षण न लगताराम लक्ष्मण धरु
न आणीन पुरुषार्थ ॥ ७७ ॥ अपार सैन्य समुद्र ॥ सैवे देत दशकंदर ॥ रावणासीन
मुनीसत्वर ॥ कुंभकर्ण नीघाल ॥ ७८ ॥ रणपथे येता कुंभकर्ण ॥ तेथे होते जेवा नर
गण ॥ ते अर्धवध पळाले उद्यन ॥ राजा वनेत्रा सागावया ॥ ७९ ॥ कुंभकर्ण कीचा ॥ विजया ॥
रिध अतरि ॥ मी काय लोटेया वा नरावरि ॥ जे साजबुकावरि केरी ॥ धावता ॥ ७९ ॥
पुरुषार्थ दिसेना ॥ ८० ॥ पिः पीलिके वरिधा वंकागज ॥ किआळिके वरिदि जरा ॥
ज ॥ कीमुट सभत तेज पुंज ॥ पंडित शांता न पावेचि ॥ ८१ ॥ आरंभी राक्षसे तु
बळ ॥ वानरावरिधा वीलेच पळ ॥ कपि उदाबले सबल ॥ शिळा रक्षथे उनया ८२ ॥
मुध्य जाते अपार ॥ लोटले अशुद्राचे पुर ॥ परिते न मानीच घट शीत ॥ लक्षण
हे युध्य कायसे ॥ ८३ ॥ अपार बोलती ॥ परिते न भेदा पंडिताचे बीती ॥ जेसे

॥ विजया ॥

॥ ७ ॥

द्रव्यभरस्पर्शभाडती ॥ महाया प्रासनमानेते ॥ ८४ ॥ असो ते न्ना मुदुलचेउन ॥
 रामावरिलोडला कुंभकर्ण ॥ ते न्ना अटरा पप्रवानरगण ॥ पर्वते पाषाणभीर
 क्रावती ॥ ८५ ॥ पर्वती पडोन पडत ॥ परितो सर्वथानमानी किंचित ॥ जेवी कुं
 भकर्ण वरिबहुत ॥ समने पडतान डुक मकि ॥ ८६ ॥ तो शतशृंगमंडितपर्वा ॥
 चरुनी भीरका नीहनु मित ॥ तो मुरियात वरित ॥ फोडुनी टा कि कुंभकर्ण ॥ ८७ ॥
 लणेरुभीर्क राधरिधीर ॥ तुवा ला कि उमासेनगर ॥ लणानी धावी लोड
 श्रोत्र ॥ हेनु मंता वरिते धवा ॥ ८८ ॥ व केरुळ भवडोनी ॥ मारुती वरिघालि
 उचछोनी ॥ ते वेळि वायु सुत धरणी ॥ मूर्ख नायेरुनी पडीयेला ॥ ८९ ॥ ते
 खेनी वाहिनी पती ॥ नीळघावी लास सीरगती ॥ कुंभकर्णचे मुध्य निगुती ॥
 देवकी मानी वीला कीत ॥ ९० ॥ नीळ पर्वत राकीला ॥ असुरे मुष्टिघाते चुर्णके

नीलासमुद्रिघात दिद्यला ॥ मुखितिपडिडाधरिणीये ॥ ११ ॥ तोधावलेचौधवानर ॥
 जेकाकासदिदिताकरणार ॥ क्रुषभशरभगवाक्ष विरागधमादनचौधाता ॥ १२ ॥
 चौधानीच्यारपर्वत ॥ राकीतेजालेअकस्मात् ॥ तेमुद्रिघातप्रीहीवत ॥ करुनीवीजय
 राकीलेतेधवा ॥ १३ ॥ मगगवयगवाक्षधरणिवरि ॥ कुंभकर्णजापरीलास्य ॥ १४ ॥
 करि ॥ दोघाभीरकावलेअंबरि ॥ मगगतीवरीपडीयेले ॥ १५ ॥ मगभय
 हास्वर्गजेकुंभकर्ण ॥ वाटेब्रह्माडेआयउलान ॥ मगरणांगणेदेखोन ॥ यासा
 वयाधावीनला ॥ १६ ॥ कवंधालेनीअकस्मात् ॥ चानरधरिलेबहुत ॥ मु
 र्खीघालेनीचावत ॥ गीकिलेगाणितअकस्मात् ॥ १७ ॥ जेगिरसहस्रद्रम
 पाणि ॥ असुरगीकिलेमुखपसरोनी ॥ कीतककर्णरघ्रीरीधानीपळते
 जालेयेकसर ॥ १८ ॥ मगाउरलेवानरतेबळ ॥ रमरसाहुनीपळले ॥ गी

गीराम
 ॥ १८ ॥

९

रिंकंदरामाजीदडाले ॥ श्रीमभयेकरनीपा ॥ ८८ ॥ कीतेकतेकोवानरगण ॥ चंडकीर्ण
 पुत्रासंगलेशरण ॥ तेवेळपवतघउन ॥ सुग्रीवआपणधावीनला ॥ ८९ ॥ कुंभकर्ण
 वैरिपर्वतयकीला ॥ येणमृदघटवतचुणकेला ॥ सुग्रीवलणेनभिंगलावथापुष्ट
 राक्षसा ॥ ९० ॥ तुसेनाशिकेआणिकर्ण ॥ क्षणनलेगताछेदिन ॥ वीमानीबुदा
 रकगण ॥ जेणेकरनीतोषती ॥ ९१ ॥ बुझाजेहृषधुदशकंदर ॥ पंचवटिसयैउ
 नीतस्कर ॥ ज्यानकिचिद्रुनसंदर ॥ यउनीआलाचारुनी ॥ ९२ ॥ तरितस्कराशिद
 ढहाचिपुर्ण ॥ छेदावेनासिकेआणिकर्ण ॥ तुरावणानुजेकुंभकर्ण ॥ सीक्षातावी
 नतुजआता ॥ ९३ ॥ कुंभकर्णलणलणसुग्रीवसी ॥ मस्यकाआगळबहुबालसी ॥
 जैसापंतंगवडवानलासी ॥ वीसवाचयाधावीनला ॥ ९४ ॥ मस्यकजालेकोथा
 यमान ॥ लणमीसगळपर्वतगीजीन ॥ किरश्रीकस्यपुछकरन ॥ ताडिनस

णेखदिरंगर ॥ ७॥ पुर्णनामिपुर्णतंतु ॥ तेणेकेवीवाधीजेजेरावत ॥ सुर्यमंडकधगध वीजय ॥
 गीत ॥ खद्योतकेवीगिकिपा ॥ ६॥ तैसातुबकहिनकानर ॥ रागेजावासीमजस
 मोर ॥ मकुणप्राणशरिर ॥ चुणकरिनचुडाआता ॥ ७॥ औसबोलतारावणान ॥ ८॥
 ज ॥ पर्वतघेउनीघावेअकजे ॥ तौकभकणचुदइसहज ॥ येउनीयाजादकला ॥ ९॥
 पर्वतगलाचुणहोउनी ॥ मगरागेधावेकुंभकण ॥ सुग्रीवासीचुराणिधरुनभोवडिलेगे
 रगरा ॥ १०॥ पाथीवरिआपडुईडित ॥ तवपरमप्रेतापीसुर्यसुत ॥ पीनानीकुंभक
 णीचाहात ॥ उर्ध्वपंथउडाळा ॥ ग्रहमंडलपर्यंत ॥ उडौनीगेलकपीनाथ ॥ त्या
 हुनीकुंभककणीचाहात ॥ उचावलातकाकि ॥ ११॥ मागुतावानरेश्वरधरिलो ॥
 बळेकक्षेमाजीदारलो ॥ कक्षावकितगुंडाकला ॥ कंठाकलाकपितो ॥ १२॥ म्हणे
 तुझावाकिनेमाझारावण ॥ कक्षेतघालुनीकेलेस्वान ॥ तोआजीसुउघेतलोपुर्ण ॥

॥राम॥

॥८॥

१०

॥ आ २ ॥

ग

टाकिनखुदुनसगलाचि ॥ १३ ॥ जयवादाचाजर ॥ होता जाला अपार ॥ रणिसाधीला
वानरेश्वर ॥ मग घट श्रोत्र परतला ॥ १४ ॥ संसार साव परम थोर ॥ यांत गुंतला सा
धकनर ॥ तो पळो पाहे बाहेर ॥ तेवी वानर दिनी घोरि छि ॥ १५ ॥ दुर्ग धीत पडे मूक
फळ ॥ किंपंक गर्त तमराळ ॥ किंबहुन श्रोत्रिनीर्मळ ॥ हिंसक ग्रहिकोडला ॥ १६ ॥
असो मत्त जाला कुंभकर्ण ॥ नने चिदे लाचे स्मरण ॥ तो कक्षतुनी सूर्य नंदन ॥ न
लगता क्षण नी धाला ॥ १७ ॥ नेत्र पाते जाहालत ॥ तीतु कयामौ लीसा धील क्रय ॥
असुर स्कंदि उग्रायकत ॥ तारानी धत धवा ॥ १८ ॥ दोनी कर्णाचे वेळे ॥ दोनी हाते
दुष्ट धरिला ॥ दंत संदित सापडला ॥ नाशिक कुंभकर्णाचे ॥ १९ ॥ कर्ण नाशिक
उपडोबी ॥ सुग्रीव उडाला गगनी ॥ राघव चरणी मूस्त करे उनी ॥ प्रेमे करनी डळत
से ॥ २० ॥ येकचि जाला जय जय कार ॥ देव वर्षति सुमन भार ॥ यश शश्वी जा

10A

॥राम

॥१०॥

॥

लासुर्यकुमर॥आकिगिरधुवीरतयाते॥२१॥घ्राणकर्णनिलासुर्यसुते॥परितेशुद्धिना
हिकुंभकर्णते॥वर्तमानकळलेरावणाते॥घटश्रात्रवीठबीला॥२२॥परमचिताक्रा
तरावण॥मगनापीकदिधलापाटुन॥गगनचुंबीतयौडाघन॥तयाशिदर्पणबाधीकीजय॥
ले॥२३॥सप्तखणिदामोदरदेख॥सावरिटाकेनापीकि॥कुंभकर्णसिन्धुसदेख॥॥१०॥
आरसातेकोदाखविन्ना॥२४॥छेदुनीगेलनासीककर्ण॥दर्पणीदेखेकुंभकर्ण॥
कक्षतुनीगलासुर्यसंदन॥जालेभरणतकाकि॥२५॥जैसाश्रुककुलतापर्व
त॥तैसाकुंभकर्णदिसआरक॥परमवीडलामनात॥स्वरूपओपुलदेखानी२६॥
मनातल्लणकुंभकर्ण॥आताकायव्यथवाचीन॥दशग्रीनाशिपरतान॥कायव
दनदारखु॥२७॥आतासकळकूपिरातलक्षुमण॥गीकिनमीनलगताक्षुण॥
वृथैपालयिद्यालिन॥नीदाकिनदेवसर्व२८॥कुंभकर्णपरतलातेवेकि॥

(118)

दंतरगडिलेअधरपाकि॥क्रुतांतवतहाकदिधलि॥डलमकिलिउर्वीतिहो॥२॥
 परतलादेखानकुंभकर्ण॥पकोलागलेवानरगण॥येकरदुपतीशिआलेशरण॥
 रक्षीरक्षीअणोनीया॥३०॥द्विद्विउरुनीराघव॥कुंभकर्णोद्यतलिधाव॥तोउ
 न्मिकापतीबळार्णव॥पांचारितयाते॥३१॥मासेपाहिपासंधान॥परितोन
 मानीकुंभकर्ण॥अणुभाराहेयेकक्षण॥रोमाकडेधावीनला॥३२॥परमको
 पलारुमीत्राकुमर॥कुंभकर्णविरिटाकोलाथसप्तशर॥सपीछेंबुडालेसमग्र॥
 मध्यचगुप्तआहला॥३३॥सोमीत्राकोलेबहवाण॥परितेनमानीचकुंभकर्ण॥
 जेशापरवतावरिकाड्यायेउन॥पडताआसेननचळेचि॥३४॥पंडितांची
 वचनेचागलि॥पाखाडिपनमानीकदाकाकि॥तैसाकुंभकर्णतेवकि॥नगणीडा
 रसोमीत्राच॥३५॥तोगदाचेउनीवीभीषण॥कुंभकर्णविरिआल॥धावान॥

शराम॥

१॥११॥

(12)

महणेनीनीसीक्यायेकक्षण॥ मजुशीजातायुध्याकरि॥ ३६॥ म्यापूर्वीबोधी
ठाहडावक्तापरियाशिखोबलावीर्यार॥ तेषमूललासमये॥ शुद्धिजनमात्र
नव्वचि॥ ३७॥ गोडवयनफडुवाटती॥ कंडतगोडवाटचीती॥ राजमंदसेंडनी
श्विति॥ कंडिदाटलातयाचा॥ ३८॥ रावणदेवतवल्लिचिफळे॥ तुलासप्राप्तजा
लिसीध्रकाळि॥ यावरिप्रयोतरतेवळे॥ देताजालाकंभकण॥ ३९॥ म्हणवीभी
भीषणाशतमुखा॥ हाससीमासीयाकणनाडीका॥ मीकाणआहेहदेखा॥ ना
हितुजकळलेअदापी॥ किंकक्षयासीकारण॥ तुमीळालासीयेकडेयेतुन॥ मजपु
ढेदारववीवदन॥ क्षणप्राणघईनतुजा॥ ४०॥ राक्षसामाजीदेख॥ तुंयेकजन्म
लासीजबुंक॥ कमठियातुनदारववीभुरव॥ कुळवनपावकुनीधारि॥ ४१॥ तूजी
शतखंडेकरितोयेवेकि॥ परिआलासीदयावेयातीळाजुकि॥ यांलागीरेक्षडेयेवेकि॥

वीजय

१॥११॥

राम ॥
॥ १२ ॥

सर्वपरिजाणपा ॥ ४३ ॥ होय माघारायेग शि ॥ ॥ रिघरघोत मावेपाटी शि ॥ ॥ आजीकपि
सेनानी श्वये शि ॥ ॥ आशिन जामसवथा ॥ ४४ ॥ जैकोनी बंधुचेवचन ॥ ॥ माघारा परत बीजया ॥
लाभी भीषण ॥ पुठेरघुवीरावरि कुंभकण ॥ मद्रुलघुनीलोदरा ॥ ४५ ॥ असे देखत ॥ ॥ १२ ॥
दिनकरकुंठदिप ॥ ॥ क्षणनलगता पुठवीलाचप ॥ ॥ जो आदि पुरम्याचा प्रताप ॥ नवण
वेवदशास्त्रा ॥ ४६ ॥ रंणरंगधीरघुवीर ॥ ॥ नुवारा हे कुंभकण समोर ॥ ॥ किनीशासौप
तां दिनकीर ॥ ॥ उदयाचकिवीराज ॥ ४७ ॥ श्रीराममण कुंभकण ॥ ॥ आजीत पात्रजा ला
सीममबाण ॥ ॥ तुवात्रा शिलेत्री भुवन ॥ ॥ जामानी ठेस अवतुरडा ॥ ४८ ॥ तुवां जेगीची
किलेवानरगण ॥ ॥ ते पाठ फाडून बाहेर काढेन ॥ ॥ तुसे ज्यवळि आहु मरण ॥ ॥ पाहे सा
वधाने मजकडे ॥ ४९ ॥ तुमूय पुरीस जातुनी राहे ॥ ॥ सवेच पाखी तारावण ॥ ॥ लेकस
स्थापीलावी भीषण ॥ ॥ चंद्राकगग भ्रमती तो ॥ ५० ॥ ॥ यावरि बोले कुंभकण ॥ ॥ तुजन्मा

तरिचा शुत्रपुर्ण ॥ हे आत्मासी आहे सर्वज्ञान ॥ मुक्तिवीरवणसर्वहि ॥ ७१ ॥ तुव ॥
 आपुलेसामर्थवणीलि ॥ परिमजपुढेनचाले ॥ कपिदळगीकीनसगळे ॥ दांतादं
 तनमळवीत ॥ ७२ ॥ तुवावधि लेखरत्रीसारादुषण ॥ वाकीमारीलाकपटेकरून ॥ प
 रिमजपुढेताअभीमान ॥ नचालेकदामानवाया ॥ ७३ ॥ अरेमीनीद्राणेवीजा
 लेनीमग्न ॥ नाहितरिनुरतेत्रीभुवन ॥ तजवीक्षणतापुर्ण ॥ हासोमलयतरो ॥ ७४ ॥
 वनचराससदापीडिकुंजर ॥ परिमजपुढेहोयजर्जर ॥ किंमेघापुढेवणवाअ
 पार ॥ वीशोनजायक्षणार्थ ॥ ७५ ॥ तसतुजयथकरिन ॥ सोडितुसेनीवाणवा
 ण ॥ असेअकनीरघुनदन ॥ वोढिलाआकणशरतेव्ह ॥ जेशाप्रिलयवीजा
 अनीवार ॥ तैसेरघातिमाचयेतीशर ॥ असुरमुखपसरिलेभार ॥ गीलीलेअपार
 शरतेव्ह ॥ ७६ ॥ अयाभीतवानरहोत ॥ पाहातीअसुराचेसामर्थ ॥ वाणगीकी

(14)

राम ॥
१३ ॥

लेख संख्यात ॥ नवे गणीत तयाचे ॥ ७७ ॥ समुद्रिमीकनीगंगपुर ॥ तेसे मुख्यात
साटवीशरसंभार ॥ मग होती घेउन मुद्रलघोर ॥ रामावरिधाकीनला ॥ ७८ ॥ वीजय ॥
हाकफाडिलिप्रचंड ॥ तेणे उक्कमेकलेब्रसाडे ॥ जकचरवनचरुदेड ॥ गतः प्रा ॥ ७९ ॥
णजाहले ॥ ८० ॥ मुद्रलभावहनीचनकार ॥ राघवावरिधालुपाहेअसुर ॥ मग
रणरंगधीररघुवीर ॥ दिव्यशंकादिपे ॥ ८१ ॥ मंत्राच्याआवृत्तीकरुने ॥ बाणा
ग्रीस्थापीलाअया ॥ उजाकर्णवाटिठिन ॥ बाणसोडिलाराघव ॥ ८२ ॥ मुद्र
लासहितहस्त ॥ बाणेतोडिलाअवस्मात ॥ नेदितगेलुगगनपथ ॥ सपदन
गज्यापरि ॥ ८३ ॥ रघुवीरबाणहासुपण ॥ गेलाहस्तसपघेउन ॥ सवेचसुर्यवीज
उपान ॥ रघुनेदनशरसोडि ॥ ८४ ॥ तेणखटिलादुजाहस्त ॥ नीराकपथेगेला
अकस्मात ॥ दोनीभुजाभुमीवरिकीपउत ॥ बानरउचलानीमहापर्वत ॥ हस्त

(14A)

रेचिते असुराचे ॥ वीधाचक उया परि ॥ ६६ ॥ परि भुजा हो उनीया जीत ॥ जाती
 कपिचे भारंगडित ॥ वानर उचले नमहा पर्वत ॥ हसरे चिते असुराचे ॥ ६६ ॥
 साहजी संश्रामाचि भुमि ॥ वानर लपती गीरी कंदर द्रुमी ॥ परि अचकळान स
 ग्रामी ॥ रघात माचच केना ॥ ६७ ॥ मरा काठिले दोन शर ॥ गुणिये जुनीया
 रनहर ॥ तिहिते चरण समग्र ॥ रवुं हिले जपना पारोनीया ॥ ६८ ॥ पाथेगा डेव
 डिते प्रचंड उधार ॥ स्वाले वक्षपर्वत हेनी चुर ॥ महा वक्षधे उनी वानर ॥ ताडि
 तीवळे यारि दारि ॥ ६९ ॥ असे मुख पसरुनी ते काकि ॥ राक्षस जाती चपट चा
 लि ॥ वीमानि सुरते काकि ॥ ओश्वी येकरि तीत याचा ॥ ७० ॥ नागरी कोलो
 चनी वदनी ॥ उवाळा साडि को धकरनी ॥ भिमका कारखरु केडे वाणि ॥ अया
 ध्याना येस्था पीले ॥ ७१ ॥ धावता वा युचे करि खंडण ॥ असे रघुपतीचा बाण ॥

राम॥

॥११४॥

आकर्णवोदिये रुन॥ नलागता क्षण सोडि॥ ७२॥ वजे तुवे शैलम शिखर ते तसे
 बाणे गुडवीले शौर॥ भेदित गेले अवर॥ प्रलय गर्जना करित चि॥ ७३॥ बीमानी बीज य
 धे रुन धकतोर रु॥ अयाभीत होती शिरो दिन कर॥ तो शिर उतरो नीसवर॥ लंके ॥ १४॥
 वरि पाडियेले॥ ७४॥ बहत सदन मोडन॥ कितेक असुर पावले मरण॥ ते वेळी
 वंदारु कगण॥ सुमने वर्षती राघव वरि॥ ७५॥ उपालय कचि जय जयकार॥ बी
 उपरि जाला श्रार घुवीर॥ दुंदुभी बाजवीती शरेश्वर॥ आनंद अंबर न समायें॥ ७६॥
 पावीले सकळ वानर गण॥ वेदितो रघुपती च वरण॥ कुंभकर्ण नि उरले सैन्य॥ लंके
 माजी प्रवेशेले॥ ७७॥ सभे विय उनीघायाक॥ वर्तमान सागती सकळ॥ ओ
 कत रावण पडला वीकळ॥ सीता सनावर नीखाळता॥ ७८॥ हणगेले कुंभकर्ण
 असे नीधान॥ बंधुकीण दिशा सब शुन्य॥ असा शोक समुद्रि बुडतारावण॥ आ

157

लाधावोन इद्रि जीता ॥ ७९ ॥ रावणासीसांवरन ॥ म्हणे राया पाहे वीचारन ॥ याम्
 ललोका शिरो नचिर जीव कोण राहिला ॥ ८० ॥ या वरि आमुची वीपरीत काळ ॥
 मनुष्य आरिते राक्षस दक ॥ खद्योत मी कोले सूर्य मंडल ॥ मस्य के श्रु गोळ हा ल
 वीला ॥ ८१ ॥ पतंगाच्या पक्षवाते कर नी ॥ केसा वीसाले प्रलयाग्नी ॥ भुतांनी क
 केने मुनी ॥ कुंठ के कर नी भक्षी ला ॥ ८२ ॥ कुंभ कर्ण वीर केशरि ॥ नरवानरि मा
 रिला समरि ॥ येव वीपरित काका चिपरि ॥ असे च असे वीचार ॥ ८३ ॥ रावणाचे
 दशक दयनेत्र ॥ तीत कुंठळ ती दरवनीर ॥ ते काळिसाहा जण वीर ॥ उभे राकले राव
 णा पुढे ॥ ८४ ॥ राम वीजय ग्रंथ वीषय ॥ युध्य कंडु मांडला वीरस ॥ ते श्रवण करा ॥
 ब्रह्मानंद करी नीया ॥ ८५ ॥ रणरंग धीरु वीर ॥ अकवळ कपर मउदार ॥ उभय
 अक्षय श्रीधरावर ॥ वीजर साचार सर्व दा ॥ ८६ ॥ राम वीजय ग्रंथ सुंदर ॥ स

16.

राम॥
१८॥

मत्तवाल्मीकिनाटकधार॥ सदापरिसेतभक्तचतुर॥ सप्तवींशतीमोध्यायगोविन्द
उहा॥ १८७॥ श्रीरामार्पणमस्तु शुभंभवतु ॥ पत्रे १८॥ बोव्या १८७॥ ५२ ५२॥ ५२ ॥ ११२८





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com